Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 6, June - 2025

DOIs:10.2018/SS/202506005 --:-- Research Paper / Article / Review

"आधुनिक संस्कृत साहित्य: एक मूल्यांकन"

मंजू सैनी

संस्कृत प्राध्यापिका, शहीद उधम सिंह राजकीय महाविद्यालय, मटक माजरी (इंद्री) करनाल, हरियाणा

Email - manjusam444@gmail.com

शोध -आलेख सार: संस्कृत भाषा केवल एक धार्मिक या दार्शनिक भाषा नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास का मूल आधार है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति, दर्शन, विज्ञान और साहित्य की संवाहक है। यद्यपि संस्कृत का प्राचीन साहित्य अत्यधिक समृद्ध है, परंतु यह धारणा गलत है कि संस्कृत का विकास आधुनिक युग में रुक गया है। आधुनिक युग में भी संस्कृत साहित्य का सृजन निरंतर हो रहा है। 19वीं सदी से लेकर वर्तमान तक संस्कृत में साहित्यिक रचनाओं की सतत परंपरा रही है, जिसे 'आधुनिक संस्कृत साहित्य' के नाम से जाना जाता है। आधुनिक संस्कृत साहित्य एक जीवंत साहित्यिक परंपरा है, जिसमें समकालीनता और शाश्वतता का सुंदर सामंजस्य है। यह साहित्य न केवल भारतीय सांस्कृतिक चेतना का वाहक है, बल्कि बदलते समय के अनुरूप नई सोच और दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करता है। आधुनिक संस्कृत साहित्य न केवल परंपरा का निर्वाह करता है, अपितु समकालीन विषयों पर रचनात्मक विमर्श भी प्रस्तुत करता है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर आज तक अनेक विद्वानों, लेखकों एवं कवियों ने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में उत्कृष्ट कृतियाँ प्रस्तुत की हैं। यह शोध-पत्र आधुनिक संस्कृत साहित्य के स्वरूप, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों, रचनाकारों और योगदान, संस्कृत के **संरक्षण** एवं **चुनौतियाँ** पर प्रकाश डालता है।

मुख्य-शब्द : संवाहक , सांस्कृतिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण , समावेशी, प्रगतिशील, पुनरुत्थान , संवेदनशील ।

1. प्रास्ताविक :

संस्कृत भाषा केवल एक धार्मिक या दार्शनिक भाषा नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास का मूल आधार है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति, दर्शन, विज्ञान और साहित्य की संवाहक है। यद्यपि संस्कृत का प्राचीन साहित्य अत्यधिक समृद्ध है, परंतु यह धारणा गलत है कि संस्कृत का विकास आधुनिक युग में रुक गया है। आधुनिक युग में भी संस्कृत साहित्य का सृजन निरंतर हो रहा है। 19वीं सदी से लेकर वर्तमान तक संस्कृत में साहित्यिक रचनाओं की सतत परंपरा रही है, जिसे 'आधुनिक संस्कृत साहित्य' के नाम से जाना जाता है। आधुनिक संस्कृत साहित्य एक जीवंत साहित्यिक परंपरा है, जिसमें समकालीनता और शाश्वतता का सुंदर सामंजस्य है। यह साहित्य न केवल भारतीय सांस्कृतिक चेतना का वाहक है, बल्कि बदलते समय के अनुरूप नई सोच और दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करता है। आधुनिक संस्कृत साहित्य न केवल परंपरा का निर्वाह करता है, अपितु समकालीन विषयों पर रचनात्मक विमर्श भी प्रस्तुत करता है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर आज तक अनेक विद्वानों, लेखकों एवं कवियों ने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में उत्कृष्ट कृतियाँ प्रस्तुत की हैं। यह शोध-पत्र आधुनिक संस्कृत साहित्य के स्वरूप, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों, रचनाकारों और योगदान, संस्कृत के **संरक्षण** एवं **चुनौतियाँ** पर प्रकाश डालता है।

2. परिभाषा

'आधुनिक संस्कृत साहित्य' से आशय उस साहित्य से है जो लगभग 1850 ई. के बाद रचा गया हो और जिसमें आधुनिक जीवन-मूल्यों, समकालीन समाज की समस्याओं, राजनीतिक, एवं सांस्कृतिक विषयों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति हो। इस साहित्य में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय देखा जाता है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य के काल- सीमा निर्धारण को तीन भागों में बांटा जा सकता है:

प्रारंभिक आधुनिक काल: 1850–1947 (स्वतंत्रता पूर्व)

स्वतंत्रता पश्चात काल: 1947–2000

समकालीन काल: 2000 से वर्तमान

आधुनिक संस्कृत साहित्य में **नवीन साहित्यिक विधाएँ** विकसित हुईं। संस्कृत साहित्य में उपन्यास, लघुकथा, निबंध, आत्मकथा, रेडियो नाटक जैसी आधुनिक विधाओं का प्रवेश हुआ। आधुनिक संस्कृत कवियों जैसे **डॉ.** अंबिकादत्त व्यास, **डॉ.** राधावल्लभ त्रिपाठी, **डॉ.**अभिराजराजेंद्र मिश्र (संस्कृत साहित्य के पुनरुत्थान और समसामयिक काव्य में योगदान) , **पं.**जयनारायण यात्री (राष्ट्र के पुनरुत्थान, राष्ट्र प्रेम की भावना),

वसुदेवशरण अग्रवाल(इतिहास, संस्कृति पर लेखन), **डॉ. भानु** (आधुनिक नाट्यलेखन में योगदान),**पं. सत्यमूर्ति शास्त्री** (संस्कृत काव्य के अग्रणी कवि। तर्क और गणित पर आधारित काव्य रचनाएँ *गणितशतकम्, कवितार्किकसरस्वती*), **डॉ. रघुवीर चौधरी (**संस्कृत में विज्ञान तकनीकी और दर्शन विषयक रचनाएँ। *भारतीय तत्वज्ञानम्* जैसे ग्रंथों में योगदान), **डॉ. वाणी त्रिपाठी** (आधुनिक विषयों पर संस्कृत कविताओं की सर्जना। स्त्री चेतना और समकालीन विषयों पर काव्य),**डॉ. विद्यानिवास मिश्र** (आधुनिक संस्कृत निबंध-लेखन में महत्वपूर्ण योगदान। भाषाशास्त्र और भाषिक सौंदर्यशास्त्र पर लेखन), **डॉ. रमेश चंद्र आचार्य (**संस्कृत में राष्ट्रवाद और समसामयिक विषयों पर आलेख व नाटक) **डॉ.**शुधिकांत भारद्वाज आदि ने संस्कृत साहित्य के पुनरुत्थान और समसामयिक काव्य में अपना योगदान दिया।

आधुनिक युग में संस्कृत साहित्य ने नया रूप ग्रहण किया है। आधुनिक संस्कृत कवि परंपरा और नवीनता के संगम को दर्शाते हैं। वे न केवल भाषा की शुद्धता को, शास्त्रीय रूपों को अपनाते हैं, बल्कि समकालीन विषयों और सामाजिक समस्याओं पर भी मुखर होकर लेखन करते हैं। इस प्रकार उनका दृष्टिकोण समावेशी, प्रगतिशील और जागरूक है। आधुनिक संस्कृत साहित्य, विशेषकर काव्य, परंपरागत शैली और विषयों से आगे बढ़ते हुए समकालीन समाज, राजनीति, विज्ञान, और वैश्विक समस्याओं की ओर उन्मुख हुआ है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में **परंपरा और नवोन्मेष का समन्वय** है। आधुनिक संस्कृत कवियों का दृष्टिकोण परंपराओं को नकारने का नहीं, बल्कि उन्हें नवीन संदर्भों में प्रस्तुत करने का है। आधुनिक संस्कृत कवि परंपरा का सम्मान करते हुए भी नवीनता की ओर अग्रसर हैं। काव्यशास्त्र की सीमाओं में रहकर आधुनिक विषयों को प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक संस्कृत साहित्य में छंद, अलंकार और रस का प्रयोग यथावत है, परंतु विषयवस्तु अधिक समसामयिक हो गई है। **उदाहरण**: पं. रामकरण शर्मा ने अपने काव्य में पारंपरिक छंदों का प्रयोग करते हुए आधुनिक युग की जटिलताओं को व्यक्त किया।

आधुनिक संस्कृत साहित्य **सामाजिक चेतना और मानवीय सरोकार** से युक्त है। आधुनिक युग में संस्कृत कवियों ने समाज में व्याप्त विषमताओं जैसे सामाजिक असमानता,जातिवाद, छूआछूत ,स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, बाल विवाह, युद्ध, आतंकवाद, पर्यावरण-

प्रदूषण आदि विषयों पर रचनाएँ लिखी। **उदाहरण**: 'शारदा' (हरिनाथ शास्त्री), '*दुःखभारम्*– सामाजिक पीड़ा पर आधारित नाटक है। डॉ. हरिदत्त शर्मा की कविताओं में समाज की विषमताओं और शोषण के विरुद्ध स्वर मुखरित होते हैं। दहेज प्रथा, जातिवाद, स्त्री शिक्षा जैसे विषयों पर संस्कृत नाटकों, कविताओं और लेखों में विमर्श किया गया। *"नारीणां शिक्षया जातं राष्ट्रस्य उत्कर्षणम्।"*(नारी शिक्षा से राष्ट्र की उन्नति होती है।)

आधुनिक संस्कृत साहित्य में **राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरवता की झलक देखने को मिलती है**। संस्कृत कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक भारत की सांस्कृतिक अस्मिता, राष्ट्रभक्ति, और भारतीय जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति की है। इस काल के साहित्य में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाली तथा राष्ट्रभक्ति को प्रेरित करने वाली रचनाएँ पाई जाती हैं।19वीं और 20वीं सदी के आरंभ में संस्कृत साहित्य ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भावना को अभिव्यक्ति दी। स्वतंत्रता के बाद के समय में संस्कृत कवियों ने राष्ट्रभक्ति और भारतीय संस्कृति की रक्षा का संदेश अपने काव्य के माध्यम से दिया। **उदाहरण**: पं. जगन्नाथ पाठक *(स्वराज्यसंग्रामकाव्यम्)*, बालकृष्ण शास्त्री *(संधानकुमुदम्)*, **पं.**जयनारायण यात्री की काव्यरचनाओं में राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। *"वयं भारतजनाः स्वाधीनतां याचामहे।"*(हम भारतवासी स्वतंत्रता की याचना करते हैं।)

आधुनिक संस्कृत साहित्य में **<u>वैज्ञानिक और वैश्विक दृष्टिकोण</u> देखने को मिलता है**।*"विज्ञानं मानवजीवनस्य आधारम्।"*(विज्ञान मानव जीवन का आधार है।) आधुनिक संस्कृत कवि विज्ञान, चिकित्सा, तकनीक, और वैश्विक मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, वैश्विक शांति, परमाणु युद्ध, तकनीकी विकास और मानवता के भविष्य को लेकर भी लेखन कर रहे हैं। **उदाहरण**: डॉ. वाचा दुबे और डॉ. रमेशचंद्र शर्मा की काव्यरचनाओं में विज्ञान और वैश्विक समस्याओं की झलक मिलती है। *जैवविज्ञानम्*(संस्कृत ग्रंथ)

आधुनिक संस्कृत साहित्य **<u>अध्यात्म और आत्मचिंतन</u>** का विश्लेषण करता है। संस्कृत की आत्मा सदैव अध्यात्म रही है। आधुनिक कवि इस परंपरा को जीवित रखते हुए आत्मचिंतन, ध्यान और आत्मबोध जैसे विषयों को भी स्पर्श करते हैं। आधुनिक संस्कृत काव्य आत्मविश्लेषण, अस्तित्व और अध्यात्म की गहराइयों को भी छूता है। यह केवल भक्ति तक सीमित न रहकर व्यक्तिगत अनुभवों और अस्तित्व की खोज को भी व्यक्त करता है।

इस प्रकार, संस्कृत **साहित्य** की **ज्ञानमय धारा निरंतर प्रवाहित होती रही है, आधुनिक समय में भी अनेक प्रतिभाशाली संस्कृत विद्वान संस्कृत साहित्य को उज्जवल बना रहे हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य** में, **तकनीकी युग में अन्य विषयों के प्रति पाठकों की रुचि उत्पन्न हुई है , ऐसे आधुनिक समय में दूसरों विषयों के साथ तालमेल बिठाते हुए संस्कृत का प्रचार एवं संरक्षण आवश्यक है** । संस्कृत के प्रचार - प्रसार में चुनौतियों के रूप में, पाठकों की सीमित संख्या , नई पीढ़ी में संस्कृत के प्रति जागरूकता की कमी ,प्रकाशन और विपणन में बाधाएँ **जैसी समस्याएं** हैं।

"संस्कृतं जीवति चेत् संस्कृतिर्जीवति।"
(यदि संस्कृत जीवित है तो संस्कृति जीवित है।) संस्कृत को जीवित रखने के लिए अनेक संस्थाएँ, विश्वविद्यालय, और संगठन कार्यरत हैं। आज भी भारत के अनेक विश्वविद्यालयों, संस्थानों और साहित्य अकादमियों में संस्कृत साहित्य का सृजन हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर संस्कृत की प्रतिष्ठा है। संस्कृत के समाचार पत्र (जैसे - *सुधर्मा*), पत्रिकाएँ (*संस्कृत भारती, शारदा, वाङ्मयी* ,*साहित्यवार्ता*) जैसी पत्रिकाएँ ,संस्कृत रेडियो और टीवी कार्यक्रम तथा **डिजिटल युग में** संस्कृत भाषा के ऐप्स, वेबसाइट्स (जैसे - *learnsanskrit.org*,*SanskritDocuments.org*),ऑनलाइन संस्कृत काव्य प्रतियोगिताएँ और वेबिनार ऑनलाइन मंच आधुनिक संस्कृत साहित्य को समृद्ध बना रहे हैं। **कई शिक्षण संस्थान और अकादमियाँ जैसे** राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ , अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत पीएचडी एवं शोध कार्य हो रहे हैं।

3. निष्कर्ष के रूप में , कहा जाए तो आधुनिक संस्कृत कवि एक ओर जहां शास्त्रीय परंपराओं की रक्षा करते हैं, वहीं दूसरी ओर समाज, राष्ट्र और विश्व के समक्ष उपस्थित नई चुनौतियों को भी संबोधित करते हैं। उनका दृष्टिकोण परंपरा में नयापन लाने का है – ऐसा नयापन जो जड़ों से जुड़ा हो और भविष्य की ओर देखता हो। इसलिए आधुनिक संस्कृत काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि यह एक जागरूक, उत्तरदायी और संवेदनशील साहित्य भी है। यह साहित्य आधुनिक भारत की विविधताओं, संघर्षों और उपलब्धियों का दर्पण है। यदि शैक्षिक और तकनीकी स्तर पर इसे समुचित समर्थन प्राप्त हो, तो यह साहित्य पुनः जन-जन तक पहुँच सकता है।

<u>संदर्भ ग्रंथ (References)</u>:

1. *संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास* – डॉ. सत्यव्रत शास्त्री
2. *आधुनिक संस्कृत काव्यधारा* – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
3. त्रिपाठी, वाणी. *आधुनिक संस्कृत साहित्य की धारा.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2008।
4. मिश्र, विद्यानिवास. *संस्कृत साहित्य: नवयुगीन प्रवृत्तियाँ.* वाराणसी: चौखंबा,
5. आचार्य, रमेश. *आधुनिक संस्कृत काव्य में राष्ट्रचेतना.* नई दिल्ली: राजपाल एंड संस,
6. *आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास* – डॉ. वाचस्पति उपाध्याय
7. *संस्कृत भारती पत्रिका* (विविध अंकों में प्रकाशित कविताएँ)